चिरंजीव अक्षय

राशि पाया

अक्षय की जन्मपत्रिका में चंद्रमा जन्म लग्न से अष्टम भाव में स्थित हैं इसलिए इनका जन्म लोहे के पाये में हुआ है। लोहे के पाये में जन्म स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और बालक के विकास में बाधा डालता है। आसानी से विकास नहीं हो पाता और बच्चे में रक्त संबंधी बीमारियां अधिक हो सकती हैं। जिनमें कई बार हिमोग्लोबिन का कम-अधिक हो जाना, लौहतत्व की कमी प्रमुख हैं। ऐसे बच्चे को दशाक्रमानुसार गिरने-पड़ने से चोट भी लग जाती है।

उपाय

बच्चे का हाथ लगवाकर लोहे की वस्तुओं का दान शनिवार को कराया जाना चाहिए। यदि बच्चे की उम्र ऐसी है कि वह स्वयं दान कर सकता है तो यह सर्वोत्तम उपाय का काम करेगा।

नक्षत्र पाया

अक्षय का जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ है जो कि सोने का पाया बनता है। सोने का नक्षत्र पाया होने से भी बालक के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है और स्वास्थ्य के उतार-चढ़ाव जीवन में लगातार बने रहते हैं। सोने के पाये में जन्म परिवार के लिए भी कष्ट की संभावना को बढ़ा देता है, परिवार के सदस्यों में वैचारिक मतभेद, व्यापार में धन हानि अथवा आजीविका क्षेत्रों में हानि के भी संकेत होते हैं।

उपाय

इस दोष के निवारण के लिए पीली वस्तुओं का दान बच्चे के हाथ से कराया जाना चाहिए। शास्त्रों में सोने के दान का उल्लेख है परन्तु आज यह संभव नहीं है अत: उसके विकल्प के रूप में अन्य पीली चीजों का दान किया जाना चाहिए। इन पीली वस्तुओं में चने की दाल, पीला वस्त्र आदि हो सकते हैं।

नामाक्षर-दा- अक्षय का जन्म पूर्वाभाद्रपद के नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ है इसलिए उनके नाम का प्रथम अक्षर और अंग्रेजी में डी से आरंभ किया जाना चाहिए।

मूल जन्म- क्योंकि अक्षय का जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में हुआ है इसलिए उन्होंने मूल में जन्म नहीं लिया है और जन्म से संबंधित कोई ऐसी पूजा-पाठ जो मूलों की शांति कही जाती है, कराए जाने की आवश्यकता नहीं है।

मांगलिक- अक्षय की जन्मपत्रिका में मंगल पंचम भाव में स्थित हैं अत: अक्षय मांगलिक नहीं हैं।

गुण-

अक्षय के व्यवहार का मुख्य गुण ओजस्विता और तेज है जो उनके व्यक्तित्व और कार्यप्रणाली दोनों में ही दिखाई देता है। ग्रहों के राजा सूर्य अक्षय को गुणों को और व्यक्तित्व को संचालित करते हैं जिस कारण आपके स्वभाव में राजसी ठाठ-बाठ देखने को मिल जाता है। दूसरी ओर अक्षय अधिकार भावना से काम करवाने और दूसरों पर अपनी छाप छोड़ने में सदैव सफल रहेंगे और यह अक्षय व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ गुण है।

दूसरों के अधीन काम करना आपको कम पसंद आएगा बजाए इसके आप काम करवाना अधिक पसंद करेंगे। इसके अतिरिक्त अक्षय संगठन के बजाए अकेले चलने में विश्वास रखेंगे, जैसे जंगल का राजा शेर अकेला ही रहना पसंद करता है और अपनी ही दुनिया में मस्त रहता ऐसे ही वे भी रहेंगे।

राजा के स्वभाव की भांति आप अच्छे कार्यों की प्रशंसा करेंगे और नेतृत्व गुण प्रधान रहेगा।

अवगुण-

अक्षय के स्वभाव का अवगुण उनकी अत्यधिक अधिकार भावना रहेगी जो निरंकुशता का रूप ले ले लेगी। इसको सुधारने के लिए उसके माता-पिता को प्रयास करने चाहिएं। अपने किए कार्यों का अहंकार प्रदर्शन आपके व्यक्तित्व का दूसरा अवगुण रहेगा। वे लोगों से अपेक्षाएं करेंगे और अपेक्षा में खरे उतरने में यदि व्यक्ति से कोई छोटी चूक भी हो गई तो राजा की भांति आप दंड देने वाले भी हो जाएंगे। व्यक्तित्व के इस दुर्गुण को खत्म करने के प्रयास में उनको सूर्यदेव की निरन्तर उपासना करनी चाहिए।

कार्यप्रणाली

अक्षय का जन्म कुंभ राशि के अन्तर्गत हुआ है जिसके स्वामी शनि देव हैं और वायु तत्व का अधिक प्रभाव होने के कारण अक्षय की कार्यप्रणाली कभी तो बहुत अधिक आशाओं पर आधारित मिलेगी तो कभी एकदम निराशा के भाव उन पर हावी रहेंगे। वे कला के प्रशंसक और बुद्धिजीवियों का सम्मान करने वाले रहेंगे। इनकी कार्यप्रणाली को समझना आसान नहीं होगा क्योंकि एक तो इनके व्यक्तित्व पर राजसी चिन्ह का प्रभाव और दूसरे परोपकारी कुंभ राशि इन्हें लोगों की मदद के लिए प्रेरित करेगी तो दूसरी ओर राजा की भांति गुप्त नीतियां बनाने और शत्रुओं पर गुप्त प्रहार करने का गुण भी प्रदान करती रहेगी। हस्तकला में ये निपुण हो सकते हैं। लोगों के मनोविज्ञान को समझना और उनके चेहरे से कष्ट या सुख को भांपकर उसके अनुसार क्रियान्विति भी इनकी कार्यप्रणाली में स्पष्टत: दिखाई देगा।

कार्यप्रणाली का मुख्य दुर्गुण एकाकी प्रवृत्ति का होना और कई बार मामलों को देर से हल करना रहेगा। राशि स्वामी शनि होने से ये मेहनत तो करेंगे परन्तु शनिदेव जैसे शनैचर हैं वैसे ही कई बार ये आलस्य से भर जाएंगे और कामों में देरी करेंगे।

विषय चयन और आजीविका क्षेत्र: अक्षय के जन्मपत्रिका के दशम भाव में कोई ग्रह नहीं है और दशमेश बुध के नवांश में हैं अत: अक्षय के आजीविका क्षेत्रों में बुध के क्षेत्र प्रमुखता से रहेंगे इसलिए विषय चयन करते समय बुध से संबंधित विषय लिए जाने चाहिएं और वे ही प्रमुखता से अक्षय की आजीविका के साधन बनेंगे। बुध के विषयों में लेखन कला, पत्रकारिता, व्यापार, मार्केटिंग, परामर्श सेवाएं आदि रहेंगे। वाणी के बल पर किए जाने वाले कार्य भी बुध के ही क्षेत्र हैं अत: विषय चयन में सम्प्रेषण और संचार माध्यम जैसे कोरियर सेवाएं, वायु सेवा से जुड़े विषयों को प्रमुखता दी जानी चाहिए। मनोरंजन उद्योग से जुड़े विषय भी बुध के ही अधिकार क्षेत्र में आते हैं अत: वे भी लिए जा सकते हैं।

बली ग्रह और आजीविका: अक्षय की जन्मपत्रिका में सर्वाधिक बली ग्रह शुक्र हैं अर्थात् उनका षड्बल सबसे अधिक है इसलिए अक्षय का आजीविका क्षेत्र शुक्र के विषयों से भी प्रभावित हो सकता है। यहां मतभेद न रहे इसलिए यह स्पष्ट कर दिया जाना उचित है कि संचार माध्यम के साथ ही साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया शुक्र का विषय है और पत्रकारिता आदि बुध के विषय हैं अत: इन दोनों ही साधन से आजीविका संभव है। बुध जहां आजीविका निर्धारण में आरंभ में मदद करेंगे वहीं शुक्र अपनी महादशा आने पर अपनी दिशा में ले जाएंगे। ऐसा माना जा सकता है कि अपने करियर के आरंभ में पत्रकारिता अथवा लेखन से जुड़ें और उचित दशा-अन्तर्दशा आने पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को ज्वाइन कर लें।

शुभ-अशुभ समय: दिसम्बर 2009 से अक्षय की शनि महादशा आरंभ हो चुकी है। शनि इनके जन्मपत्रिका के छठे और अष्टम भाव के स्वामी हैं जिनका संबंध रोग, ऋण आदि से है अत: इनके स्वास्थ्य का ध्यान इन 19 वर्षों में विशेष रूप से रखा जाना चाहिए। **ऐसा नहीं मानना चाहिए कि ये 19 वर्ष पूरे ही स्वास्थ्य को प्रभावित करेंगे बल्कि अन्तर्दशा दशाएं और प्रत्यन्तर दशाएं बदलने पर स्वास्थ्य में सुधार आएगा और जन्मपत्रिका के अन्य भावों के शुभ परिणाम अक्षय को लगातार मिलेंगे।**

करने और न करने योग्य कार्य: अक्षय को वाहन की गति पर सदैव नियंत्रण रखना सिखाया जाना चाहिए और जब-जब भी वे अत्यधिक अधिकार भावना का प्रदर्शन करें तो बचपन में ही उन्हें टोक दिया जाना चाहिए और धीरे-धीरे उनकी इस प्रवृत्ति को रचनात्मक कार्यों की ओर ले जाना चाहिए। इसके लिए आप उन्हें किन्हीं प्रोफेशनल क्लासेज में भी भेज सकते हैं।